New Man International Journal of Multidisciplinary Studies
(UGC Approved Journal No. 45886)
ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

28.

जौनपुर की लोक– साहित्य चेतना अध्ययन के अन्तर्गत जौनपुर लोक में प्रचलित लोकवाद्यय यन्त्रों का लोक रंजन हेतु महत्व–

डॉ अन्जू पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, के0डी0एस0 महाविद्यालय, पाली, जौनपुर (उत्तर प्रदेश)

लोक–जीवन सरल एवं सादा होने के साथ ही भाव से परिपूर्ण एक ऐसे समाज की कार्यप्रणाली को दर्शाता है कि जो समय–समय पर अपने ह्रदय के भावों का उद्‌गार लोक–कहावतों, लोक–गीतों, लोक–गाथाओं, लोक–नाटकों, एवं लोकरंजन कथाओं के माध्यम से प्रकट करता है।

जौनपुर अंचल उत्तर प्रदेश के वाराणसी मंडल का एक जनपद है, जौनपुर जनपद की पश्चिमी सीमा पर इलाहाबाद और प्रतापगढ़, दक्षिणी सीमा पर संत रविदास नगर (भदोही) दक्षिणी–पूर्वी सीमा पर वाराणसी, पूर्वी सीमा पर आजमगढ़ जिला तथा उत्तरी सीमा पर सुल्तानपुर जनपद निश्चित करता है। ये सीमायें यद्यपि कृत्रिम है, लेकिन कुछ सीमाओं का निर्धारण प्राकृतिक नदियाँ करती हैं, जैसे दक्षिणी भाग की कुछ सीमा का निर्धारण वरूना नदी और माँगुर नदी के कुछ दूर पर जौनपुर जनपद और आजमगढ़ की कुछ सीमा को बाटने का काम करती है।

जौनपुर अवधी और भोजपुरी दोनों भाषाओं का संगम स्थल है। यहाँ के पूर्वी–भाग में पश्चिमी भोजपुरी और अधिकांश भाग में अवधी लोक– भाषा प्रयुक्त होती है, यहाँ दोनो ही लोक–भाषाओं के मिलन बिन्दु के क्षेत्र में अवधि मिश्रित भोजपुरी और मिश्रित अवधी भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। विशेष बात जो दर्शनीय है। यदि हम आदर्श भोजपुरी के क्षेत्र में जाये तो सम्भवतः जौनपुर जनपद में गाये जाने वाले भोजपुरी के क्षेत्र गीत का वह स्वरूप नहीं मिलेगा जो जौनपुर की केराकत तहसील में देखने को मिलता है। इन गीतों में न अवधी के शब्द मिलेंगे न भोजपुरी के वरन् दोनो भाषाओं के मिश्रण का एक नया रूप प्राप्त होगा। ऐसे गीतों को ऐसा स्वरूप देने का सम्पूर्ण श्रेय जौनपुर के इस विषिवट क्षेत्र को दिया जा सकता है। लोक–गीत सामूहिक चेतना के फल होते है जनता के सामाजिक प्रयोजन से निःसृत होते है और इन्ही के द्वारा हमें जन–जीवन के विविध पक्षों के दर्शन प्राप्त होते हैं। उनके दर्पण में हम विशिष्ट जनसमुदाय की भावनाओं को देखते हैं। संसार सरिता की भांति गतिशील है उसकी गति जीवन है, जीवन की गति गीत हैं अतः संसार जीवन एवं गीत के रूप में थिरकते, कूदते और अनुरंजित करते लोक का व्यवहार है। लोक – जीवन में सुख–दुख, जन्म–मरण, प्रेम–वियोग, मिलना–बिछुड़ना, शादी–विदाई, श्रम–खेल के मनोभावों को अपने सरल एवं अव्याकरणीय भाषा की अभिव्यक्ति के माध्यम से गीत के रूप में सस्वर की रचना ही लोक गीत को मनोहारी यथार्थ एवं व्यवहारिक रूप देने में समर्थ होती है। किसी विशिष्ट क्षेत्र की सांस्कृतिक, भौगोलिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ उस विशिष्ट क्षेत्र के लोक–गीत को विशिष्टता प्रदान करती है।

इसी को ध्यान में रखते हुए मैने जौनपुर की लोक साहित्य चेतना के अध्ययन में जौनपुर अंचल में विभिन्न संस्कारों के अवसर पर गाये जाने वाले लोक – गीत का संकलन एवं उनमें काव्य–तत्व एवं हिन्दी भाषा साहित्य का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। इसी कड़ी के अर्न्तगत प्रत्येक संस्कार के अर्न्तगत गाये जाने वाले गीतों, एवं नृत्यों के साथ प्रयुक्त होने वाले लोक–वाद्‌य यन्त्रों के महत्व का वर्णन प्रस्तुत शोध पत्र में प्रस्तुत किया गया है।

जौनपुर लोक अंचल पूर्वांचल का अभिन्न एवं महत्वपूर्ण भाग है। जौनपुर लोक में प्रत्येक संस्कार को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है जिसमें मुख्यतः ढोलक, हारमोनियम, ढपली, करताल, खरताल, एवं घरेलू बर्तनों का उपयोग जैसे– पीतल की थाली, मिट्‌टी का मटका, आदि का प्रयोग सामान्यतः प्रत्येक

संस्कार के अवसर पर किया जाता है। जन्म के समय थाली बजाना और ढोलक की थाप पर सोहर एवं लचारी गीतों का महिलाओं द्वारा प्रयोग सामान्य सी बात है। ढोलक का ज्यादातर प्रयोग महिलाओं के द्वारा भी होना इस बात की विशेषता है कि महिलाओं को भी संगीत के प्रति लोक में स्वतन्त्रता प्रदान की गयी है जिससे वह स्वयं के भावों को ढोलक की थाप के माध्यम से अभिव्यक्त करने में सक्षम है। इसका प्रमाण हमें हिन्दी भोजपुरी फिल्मों में भी देखने को मिलता है। ढोलक सस्ता होने के साथ ही सर्वसुलभ है इसीलिए ढोलक की लोकप्रियता एवं समस्त अवसरों पर इसकी अनिवार्यता अपने आप में सिद्व है। विवाह के अवसरों पर हल्दी की रस्म ढोलक की पूजा में ढोलक को तेल एवं सिन्दूर टीकाकरण के साथ ही प्रारम्भ होती है और प्रत्येक रस्म पर ढोलक की थाप पर लोक–गीतो के माध्यम से रस्म को पूरा किया जाता है।

आदि वाद्ययों का प्रयोग चौपाल के समय संध्या–भजन एवं निर्गुण गीतों के लिए हारमानियम, ढोलक, खंजड़ी, ढपली, करताल, खरताल सामान्यतः पुरूषों द्वारा किया जाता है। महीनों के एवं मौसमों के अनुसार फगुआ, चौताल, कजरी आदि लोक–गीतों के गायन में लोकवाद्य यन्त्रों के द्वारा लोक रंजन को प्रभावशाली एवं समाजोपयोगी एवं महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति के रूप में लोक–हित में एक अत्यन्त ही गौरवपूर्ण परम्परा जौनपुर की लोक–विशेषता के रूप में एक अलग पहचान को समेटे हुये है। लोक–गीतों के साथ ही साथ श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, श्रीराम जन्मोत्सव, शिव–पार्वती विवाह, सीता स्वयंवर, राम–रावण युद्व में लोक–वाद्य यन्त्र के रूप में नगाड़े एवं शंख का प्रयोग लोक–नाट्य मंचन को जीवंत, उत्तेजित तथा उत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं एवं लोक–नाट्य के वातावरण को जीवंत दैवीय स्वरूप प्रदान करते हैं। जौनपुर लोक में शंख एवं डमरू को विष्णु एवं शिव के प्रिय वाद्य यन्त्र के रूप में प्रचारित एवं प्रसारित किया जाता है। जिसमें शंख को धार्मिक अनुष्ठानों एवं डमरू को सृष्टि विनाश के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

जौनपुर लोक में भी सात स्वरों द्वारा लोक वाद्य यन्त्रों को बिना किसी विशेष प्रशिक्षण के लगभग सभी सामान्य अभ्यास करने वाले लोकगण बिना किसी विशेष कठिनाई के सामान्य वाद्य यन्त्र की कला में कुछ हद तक निपुण हो जाते है लोक वाद्य यन्त्रों का कार्य लोक भावनाओं को जीवंतता प्रदान करना है लोक प्रस्तुती को आकर्षक बनाना लोक वाद्य यन्त्रों की उपयोगिता है । वर्णित लोक वाद्य यन्त्रों का रख रखाव भी अत्यन्त सरल है। इसलिए लोक –वाद्य यन्त्र जौनपुर लोक की आवश्यकता एवं महत्ता के लिए महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भः–

1. त्रिपाठी, पं0 रामनरेश–कविता कौमुदी, भाग–5 (ग्राम गीत)
2. उपाध्याय, डॉ0 कृष्णदेव– भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन
3. आर्चर, डब्लू जी–भोजपुरी ग्राम–गीत(बिहार रिसर्च सोसाइटी पटना)
4. गोस्वामी तुलसीदास–रामचरित मानस
5. सिंह, ठा0 राम– चारण गीत
6. सत्यार्थी, डॉ देवेन्द्र–गिद्धा, बेला फूले आधी रात

❑❑❑